



### DR. KRISHNA PATEL

Dr. Krishna Patel is a popular and versatile folk singer, who popularized the Sambalpuri folk songs across the world through her landmark creation of Sambalpuri song “Rangabati Rangabati” in 1978.

2. Born on 29<sup>th</sup> November 1958 in Kuchinda village of Sambalpur district of Odisha, Dr. Patel being inspired by her mother, from early childhood started learning music by her singer-mother and continued practising 'Chaupadi' and 'Janana'. Later on she got imparted regular formal training on music from pivotal gurus like Late Fakir Mohan Pattnaik, a great folk singer, Guru Arun Prassana Seth, Guru Pradip Patra, Guru Prabhudatta Pradhan and from Guru Prafulla Mitra. She got accredited as 'B' Grade artiste in All India Radio, Sambalpur in the year 1970 and was upgraded to 'A' grade later on. Her first song recorded and broadcast was in Sambalpuri, “Ja ja kala bhamara...”(written by Binod Pasayat) followed by “Man bagicha thi phutichhe mali...” of Ramprasad Purohit, the popular duet “Aye malti sunaguri re...” with Jitendra Haripal, “Ahare lari matara...”and many more such songs which made her the Nightingale of Western Odisha .

3. Dr. Patel became the household name for the chartbuster folk based Sambalpuri duet song, 'Rangabatee Rangabatee...' that took both Krishna Patel and co-singer Jitendra Haripal (Padma Shri awardee) to the zenith of popularity, which was recorded for All India Radio, Sambalpur in 1976-77 and re-recorded later on in Hindustan Records for Indian Record Company (INERCO), Kolkata around 1979-80. It is reported that Rangabatee song is broadcast in various Radio stations of world including BBC, London and Russia. The song earned fame and recognition for Odisha in Republic Day National Parade. The Government of Odisha organize a grand festival each year in the name “Rangabati Utsav” as a token of respect to the song and also declared the name of the native village of the lyricist Mitrabahanu Gauntia as “Rangabati Bilung”.

4. Dr. Patel represented the country in the Indian Festivals in Moscow in 1987, the Dweep Mahotsav in Andaman and Nicobar island in 1988 & 1999, the Fete-De-Pundicheri Festival in 2000. She also represented India in the Bali Yatra Mahotsav held at Bali, Indonesia.

5. The Odisha Sangeet Natak Akademi honoured her in 2002 for her significant contribution towards promotion of traditional art of Odisha. She was conferred with the Degree of Doctor of Literature (Honoris Causa) by Utkal University of Culture, Bhubaneswar on 10th of April, 2015 in recognition of her outstanding achievement in the field of Creative Folk Art and Music.



## डॉ. कृष्णा पटेल

डॉ. कृष्णा पटेल एक लोकप्रिय और बहुमुखी लोक गायिका हैं, जिन्होंने 1978 में संबलपुरी गीत "रंगबती रंगबती" रचकर संबलपुरी लोक गीतों को दुनिया भर में लोकप्रिय बनाया।

2. 29 नवंबर, 1958 को ओडिशा के संबलपुर जिले के कुचिंदा गांव में जन्मी, डॉ. पटेल ने अपनी गायिका मां से प्रेरित होकर, बचपन से ही संगीत की शिक्षा ग्रहण करनी शुरू दी तथा 'चौपदी' और 'जनाना' संगीत का निरंतर अभ्यास करती रहीं। बाद में, उन्होंने महान लोक गायक स्वर्गीय फकीर मोहन पटनायक, गुरु अरुण प्रसन्ना सेठ, गुरु प्रदीप पात्रा, गुरु प्रभुदत्त प्रधान, गुरु प्रफुल्ल मित्रा जैसे प्रमुख गुरुओं से संगीत का नियमित औपचारिक प्रशिक्षण प्राप्त किया। वर्ष 1970 में उन्हें आकाशवाणी, संबलपुर में 'बी' ग्रेड कलाकार के रूप में मान्यता मिली तथा बाद में उन्हें 'ए' ग्रेड में प्रोन्नत कर दिया गया। उनका पहला रिकॉर्ड और प्रसारित किया गया गीत बिनोद पसायत द्वारा लिखित "जा जा काला भमरा..." था जो संबलपुरी में था। उसके बाद उन्होंने रामप्रसाद पुरोहित द्वारा लिखित "मन बगीचा ती फूटीचे माली", जितेंद्र हरिपाल के साथ लोकप्रिय युगल गीत "ए मालती सुना गुरी रे ..." जैसे कई और गीत गाये हैं जिसके कारण उन्हें पश्चिमी ओडिशा की स्वरकोकिला कहा जाता है।

3. डॉ. पटेल अत्यंत लोकप्रिय लोक आधारित संबलपुरी युगल गीत, 'रंगबती रंगबती...' गाकर घर-घर में मशहूर हो गईं। इस गीत ने डॉ. कृष्णा पटेल और और सह-गायक जितेंद्र हरिपाल (पद्म श्री पुरस्कृत) दोनों को लोकप्रियता के शिखर पर पहुंचा दिया। इस गीत को सबसे पहले 1976-77 में आकाशवाणी सम्बलपुर में रिकॉर्ड किया गया था और बाद में 1979-80 के आसपास इंडियन रिकॉर्ड कंपनी (इनेरको), कोलकाता के लिए हिंदुस्तान रिकॉर्ड्स के लिए भी रिकॉर्ड किया गया था। उल्लेखनीय है कि बीबीसी, लंदन और रूस सहित दुनिया के विभिन्न रेडियो स्टेशनों में रंगबती गाने का प्रसारण किया गया है। इस गीत ने गणतंत्र दिवस राष्ट्रीय परेड में ओडिशा के लिए प्रसिद्धि और पहचान अर्जित की। ओडिशा सरकार प्रत्येक वर्ष "रंगबती उत्सव" नाम से एक भव्य महोत्सव का आयोजन करती है, जिसे गीत के सम्मान के प्रतीक के तौर पर देखा जाता है और इस गीत के गीतकार मित्रभानु गौंटिया के गाँव का नाम "रंगबती बिलुंग" भी घोषित किया गया है।

4. डॉ. पटेल ने वर्ष 1987 में मास्को के भारतीय महोत्सव में तथा वर्ष 1988 और 1999 में अंडमान और निकोबार द्वीप के द्वीप महोत्सव, 2000 में फेटे-डी-पुंडीचेरी महोत्सव में देश का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने बाली, इंडोनेशिया में आयोजित बाली यात्रा महोत्सव में भी भारत का प्रतिनिधित्व किया।

5. ओडिशा संगीत नाटक अकादमी ने ओडिशा की पारंपरिक कला को बढ़ावा देने के उनके अभूतपूर्व योगदान के लिए वर्ष 2002 में उन्हें सम्मानित किया। उन्हें रचनात्मक लोक कला और संगीत के क्षेत्र में उनकी उत्कृष्ट उपलब्धि के लिए 10 अप्रैल, 2015 को उत्कल संस्कृति विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर द्वारा डॉक्टर ऑफ लिटरेचर (मानद) की उपाधि से सम्मानित किया गया।